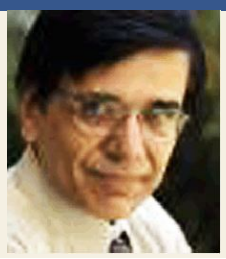

डॉ. राघबेन्द्र झा

सेंट स्टीफन कॉलेज से बी.ए. (ऑनर्स) और दिल्ली स्कूल ऑफ इकॉनामिक्स से एम.ए. किया. उन्होंने कोलंबिया यूनिवर्सिटी, न्यूयार्क से अर्थशास्त्र में एम.फिल और पीएच.डी. की डिग्रियाँ हासिल कीं. ऑस्ट्रेलियन नेशनल यूनिवर्सिटी आने के पहले आपने अमेरिका में कोलंबिया यूनिवर्सिटी और विलियम्स कॉलेज में अर्थशास्त्र के अलावा कनाडा में क्वीन यूनिवर्सिटी और इंग्लैंड वारविक यूनिवर्सिटी में भी पढ़ाया है. भारत में उन्होंने दिल्ली स्कूल ऑफ इकॉनामिक्स, आई.आई.एम. बेंगलौर और इंदिरा गाँधी आर्थिक विकास संस्थान में भी पढ़ाया है. उन्होंने २७ पुस्तकों को लिखा और सम्पादन किया है. अर्थशास्त्र के विशिष्ट अंतरराष्ट्रीय जर्नलों में १५० से अधिक वैज्ञानिक लेखों का योगदान किया. दुनिया के कई अखबारों में उनके लेख छप चुके हैं और उन्हें अर्थशास्त्र के कई सम्मान प्राप्त हुए हैं. सम्प्रति - ऑस्ट्रेलियन नेशनल यूनिवर्सिटी, कैनबरा, ऑस्ट्रेलिया में अर्थशास्त्र के प्रोफेसर और वहाँ के ऑस्ट्रेलिया साउथ एशिया रिसर्च सेंटर के एक्ज्युकेटिव डायरेक्टर हैं. सम्पर्क : r.jha@anu.edu.au

बातचीत

हिंदी को बढ़ावा देना चाहती है ऑस्ट्रेलिया की सरकार

प्रख्यात हिन्दी प्रेमी **डॉ. पीटर फ्रडलैंडर** से **राघबेन्द्र झा** एवं **आत्माराम शर्मा** की बातचीत

बचपन, परिवार, दोस्त और शहर की स्मृतियों को पाठकों के साथ साझा करना चाहेंगे।

मेरे पिताजी कैंम्ब्रिज विश्वविद्यालय में गणित के प्रोफेसर थे। मेरा बचपन वहीं बीता। पूर्वज भारत नहीं गए थे। मेरी माँ अँगरेज़ थीं, मेरे पिताजी ऑस्ट्रिया के थे। मेरी दादी उन्नीस सौ पचपन में इंडोनेशिया में बंडुंग सम्मेलन में भाग लेने गयीं थीं। बंडुंग जाते समय वे विख्यात भारतीय श्री एम.एन. रॉय से मिलने भारत में रुकी थीं। मेरे पिताजी के एक मिश्र नामक भारतीय मित्र थे जो उन्हीं की तरह कैंम्ब्रिज विश्वविद्यालय में गणित के प्रोफेसर थे। उनके यहाँ हमारा काफी आना-जाना रहता था। इसके कारण मुझे भारतीय चीज़ों में दिलचस्पी होने लगी।

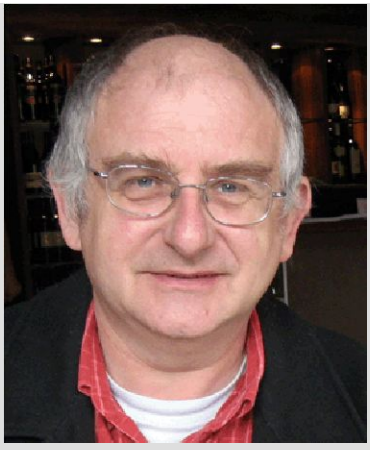

डॉ. पीटर फ्रडलैंडर

१९५६ में कैम्ब्रिज, इंग्लैंड में जन्म। स्कूल की पढ़ाई के बाद पाँच साल तक भारत भ्रमण किया। वाराणसी में भारतीय सभ्यता के बारे में अध्ययन किया और हिन्दी सीख ली। लंदन विश्वविद्यालय में बी.ए. और पी.एच.डी. की उपाधि हिन्दी में की। शोधकार्य का विषय था- 'संत रविदास की कृतियाँ और जीवनी।' तीस वर्षों से इंग्लैंड, भारत, सिंगापुर और ऑस्ट्रेलिया में हिन्दी अध्ययन और अध्यापन में काम कर रहे हैं। इस समय रैदास, कबीर और चरणदास पर शोधकार्य में सक्रिय हैं। अँग्रेज़ी भाषा में प्रकाशित किताबें- संत रविदास की कृतियाँ और जीवनी, वेल्कम संस्थान लंदन की हिन्दी हस्तलिखित ग्रंथों की विवर्णात्मक सूची, दयाबाई की वाणी। कुछ हाल के लेखों में से- रैदास की जीवनी, कबीर वाणी का इतिहास, बुद्ध धर्म में शान्ति और संघर्ष। प्रकाशन सूची के लिए देखिए www.bodhgayanews.net/publications.htm

सम्प्रति - ऑस्ट्रेलियन नेशनल युनिवर्सिटी में पढ़ाते हैं।

हिन्दी प्रेम एवं भारत के बारे में उत्सुकता कैसे जगी।

१९७७ में मैं पहली बार भारत गया। ज़मीनी रास्ते से यूरोप, मध्यपूर्व, अफ़ग़ानिस्तान और पाकिस्तान होते हुए मैं ऑस्ट्रेलिया जा रहा था। बीच में भारत में रुक गया और भारत से इतना प्रभावित हुआ कि मुझे ऑस्ट्रेलिया जाने में इक्कीस साल और लग गए। उन दिनों मैं चित्रकारी करता था। भारत में ६ महीने रह गया और हिमालय से कन्याकुमारी तक की यात्रा की। तब अधिकतर लोग हिंदी में ही बात करते थे और मुझसे बात करने की कोशिश करते। मेरी जिज्ञासा जाग गयी। १९८२ तक मैं इंग्लैंड से कई बार भारत आया। एक बार बनारस में मैं चाय की दुकान में बैठा था और मेरी भेंट श्री कृष्ण मोहन सिंह से हुई। श्री सिंह हरिश्चंद्र कालेज में अँग्रेज़ी शिक्षण के प्राध्यापक थे और साथ-ही-साथ वे महाऋषि विप्र गुप्ता इंस्टिट्यूट के नाम से एक अंग्रेजी कोचिंग क्लास चलाते थे। उन्होंने मुझसे आग्रह किया कि मैं उनसे हिन्दी सीखूँ और आदान-प्रदान के रूप में उनके इंस्टिट्यूट में अंग्रेजी सिखाऊँ। मैं राज़ी हो गया और तब से मेरे हिन्दी सीखने के सिलसिले की शुरूआत हुई। उन दिनों बनारस में टीवी नहीं आया था और शाम को और देर रात तक हमेशा अनेकों सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ करते थे। शाम को पांच बजे से साढ़े छह बजे तक मैं उनके इंस्टिट्यूट में अंग्रेजी सिखाता था और साढ़े छह बजे से आठ बजे तक वे मुझे हिंदी सिखाते थे। फिर दिन में मैं अभ्यास करता रहता। मुझे अंग्रेजी सिखाना आता तो था नहीं। इसलिए मैंने बीबीसी के Learn English by Radio का सहारा लिया। रात को मैं यह कार्यक्रम सुनता था और अगले दिन उसे इंस्टिट्यूट में विद्यार्थियों को वही पाठ पढ़ाता था! इस दौरान मैंने चार महीने खजुराहो में बिताये। मेरे पास एक गिटार था जो मैं अक्सर बजाया करता था। मेरे कई मित्र बन गए - खास

> ऑस्ट्रेलियाई ऑपेन यूनिवर्सिटियों के दूरवर्ती शिक्षा योजना के अंतर्गत १९९७ से बोलचाल की हिंदी सिखाई जाती है। यह काफ़ी लोकप्रिय है। ऑस्ट्रेलिया राष्ट्रीय विश्वविद्यालय से भी दूरवर्ती शिक्षा योजना के अंतर्गत हिंदी समेत कई भाषाएँ सिखाई जाती हैं।

करके डोम समाज में। उनकी एक शादी में बारात में मैं गया था। आधे दिन की बस यात्रा के बाद आधे दिन पैदल चल कर हम दुल्हन के गाँव पहुंचे। लोग वहां मुझे विदेश का डोम समझते थे। उन दिनों मुझे बीड़ी पीने की आदत थी। जब मैं एक दुकान में बीड़ी खरीदने गया तो दुकानदार ने मुझे दुकान के अंदर आने नहीं दिया। उसने मुझसे पैसे ड्योढ़ी पर ही रखने को कहा और जब मैंने दो कदम पीछे हटाये तो उसने आगे बढ़ कर पैसे लिये और बीड़ी का बंडल रख दिया। इस अनुभव से मैं समझने लगा कि उस ज़माने में भी लोग अब भी छुआछूत की विचारधारा को मानते थे। उसके बाद मैं तीन महीने बनारस के प्रसिद्ध कबीर चौरा मठ में रहा और कबीरदास की कविता से बहुत प्रभावित हुआ।

मैंने लंदन विश्वविद्यालय के प्रसिद्ध स्कूल ऑफ़ ओरिएंटल एंड ऐफ़्रीकन स्टडीज़ से हिन्दी में बीए किया। इसके बाद आगे की पढ़ाई भी की।

ऑस्ट्रेलिया में भारतीय संस्कृति और भाषाओं को लेकर किस तरह का नज़रिया है।

बहुत सारे लोग इन सब बातों के बारे में सोचते ही नहीं हैं। कुछ बड़े शहरों में कुछ लोग इन सबमें रुचि रखते हैं। भारत अब भी बहुत सारे लोगों के लिए एक रहस्यमय देश है और इसलिए वे भारत के बारे में जिज्ञासु होकर सोचते हैं।

ऑस्ट्रेलिया के विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जाती है?

अनेक वर्षों से केवल मैल्बर्न और कैन्बरा में हिंदी की पढ़ाई होती है। ऑस्ट्रेलिया राष्ट्रीय विश्वविद्यालय (ए.एन.यू.) में कैन्बरा में सत्तर के दशक से विख्यात प्रोफेसर ए.एल. बाशम के समय से हिंदी पढ़ाई जाती रही है। यहाँ केवल भाषा ही नहीं साहित्य भी सिखाते हैं। खास रुचि संस्कृति और धर्म में है। बीए और एमए की डिग्री मिलती हैं और कभी-कभी पीएचडी की भी पढ़ाई होती है। मैल्बर्न में ला ट्रोब विश्वविद्यालय में अस्सी के दशक से हिंदी पढ़ाई जाती है। लोग अधिकतर बोलचाल की हिंदी सीखना चाहते हैं। साहित्य में रुचि कम है। सिडनी विश्वविद्यालय में रुक-रुक कर हिन्दी की पढ़ाई होती थी। ऑस्ट्रेलिया एक विशाल देश है और लोगों को दूरी का अत्याचार सहना पड़ता है, इसलिए एक जगह में ज़्यादा विद्यार्थी उपस्थित होना मुश्किल है। विद्यार्थी कम हैं। ऑस्ट्रलियाई ऑपेन यूनिवर्सिटियों के दूरवर्ती शिक्षा योजना के अंतर्गत १९९७ से बोलचाल की हिंदी सिखाई जाती है। यह काफ़ी लोकप्रिय है। ऑस्ट्रेलिया राष्ट्रीय विश्वविद्यालय से भी दूरवर्ती शिक्षा योजना के अंतर्गत हिंदी समेत कई भाषाएँ सिखाई जाती हैं। यह सब वैश्वीकरण के लाभ हैं। ऑस्ट्रेलिया सब जगहों से दूर भी है और पास भी।

हिन्दी साहित्य की कौन-सी विधा आपको सबसे ज्यादा अपने करीब लगती है।

साहित्य कम पढ़ता हूँ। रेणु और सर्वेश्वरदयाल बहुत पसंद हैं। उदय प्रकाश की 'दिल्ली की दीवार' पसंद है। समकालीन हिंदी साहित्य नीरस लगता है। दुःख भरी कहानियों की अधिकता है। दलितों के लेख महत्त्वपूर्ण हैं, लेकिन रोषपूर्ण होने से मैं हर समय उन्हें पढ़ना नहीं चाहता हूँ। संतों की वाणी तो मैं ज़्यादा पढ़ता हूँ। कबीरदास, रैदास, चरणदास मुझे बहुत पसंद हैं।

साहित्य में आप क्या देखना चाहते हैं।

कुछ रस चखना चाहता हूँ।

क्या साहित्य समय से पीछे हो गया है।

हाँ। प्रेमचंदजी पहले उर्दू में लिखते थे। फिर हिंदी में लिखने लगे। आज होते तो शायद अंग्रेजी में लिखते। अब विचारणीय बात यह है कि आजकल के योग्य भारतीय लेखक जो हिन्दी में लिख सकते हैं, क्यों अँग्रेज़ी में ही साहित्य लिखते हैं।

विदेशों में लिखे जा रहे हिन्दी साहित्य के बारे में एक राय यह बनती है कि यह नॉस्टेल्जिया का साहित्य है।

कैसे आंकलन कर सकते हैं? पहले के भारतीय की सोच और आज की पीढ़ी के भारतीयों की सोच एकदम अलग है।

दोनों को एक साथ नहीं रख सकते। मैल्बर्न में हर महीने शाम को साहित्य संध्या का आयोजन होता है। शायद स्वाभाविक है कि इस तरह के मौकों पर जब लोग एकत्र हो जाते हैं तो एक-दूसरे को भूली बिसरी याद दिलाते हैं। और उसमें हमेशा किसी हद तक यह भाव है कि परदेसी बनने के बाद कुछ तो ज़रूर मिला है, लेकिन कुछ खास खोया भी।

विदेश में रहने वाली पहली पीढ़ी ने भारत में हिन्दी सीखी, पढ़ी और वहाँ जाकर खुद को अभिव्यक्त करने लगे। इसके बाद जो दूसरी पीढ़ी वहां पर है, हिन्दी को लेकर और हिन्दी साहित्य को लेकर उनका क्या रवैया है।

कम रुचि है। वे हिंदी पढ़ने के लिए माँ-बाप के दबाब में आते हैं। बाद में जब वे अकेले रहने लगते हैं तो कुछ में फिर से जिज्ञासा जगती है। इन लोगों में से अब यह कहना मुश्किल है कि कौन भारतीय हैं और कौन अभारतीय हैं। कुछ अभारतीय पारिवारिक तौर पर अधिक भारतीय संस्कृति के निकट हैं जबकि कई भारतीय सांस्कृतिक तौर पर ऑस्ट्रेलियाई हैं। या यह कह सकते हैं कि विश्व के नागरिक बन गए हैं।

रचनात्मक धरातल पर लेखक एक आम आदमी से किस प्रकार भिन्न होता है।

आम आदमी को लेखक से भिन्न नहीं मानना चाहिए। लेखक वह आम आदमी है जो सक्रिय है। लेखक कौन है इसकी भी परिभाषा बदलने लगी है। लोग अब हिंदी में ब्लॉगिंग करते हैं। ब्लॉगिंग को भी साहित्य की परिभाषा में सम्मिलित करना चाहिए, केवल प्रकाशित पुस्तकों और आलेखों को ही नहीं। देखिए जापान जैसे देशों में जहाँ पहले कुछ कहानियाँ फ़ॉन मेसज के द्वारा बताई गई और बाद में किताब के रूप में प्रकाशित हुई और अब फॉन उपन्यास एक मानक साहित्य का रूप बन गया है। हिन्दी में इस तरह की बात क्यों नहीं हो सकती?

ऑस्ट्रेलिया में हिन्दी के कौन से साहित्यकार लोकप्रिय हैं।

नहीं जानता। लोकप्रियता के लिए लोगों की आवश्यकता है। हिन्दी पाठकों का एक मंडल चाहिए। इस मामले में सिडनी, मैल्बर्न, कैनबरा, ब्रिसबेन के लोग अलग हैं। एक ऑस्ट्रेलियाई पहचान नहीं है।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी के भविष्य को आप किस नज़र से देखते हैं।

समाचार माध्यम के रूप में हिंदी का उज्जवल भविष्य है। हिंदी समाचार-पत्रों को पढ़ने वाले बहुत हो गए हैं। हिंदी फिल्मों के वैश्वीकरण के कारण हिंदी का काफी प्रचार हुआ है। कई भारतीय समाचार-पत्र ऑस्ट्रेलिया के लेखकों के लेख भी

> विश्व हिंदी सम्मेलन का मकसद है हिंदी प्रेमियों को एक सूत्र में बांधना। यह भारत सरकार की एक सॉफ़्ट पॉवर नीति है। चीन इस तरह के कई सॉफ़्ट पॉवर उपाय अपनाता है। विश्व हिंदी सम्मलेन में कोई हानि नहीं है। ऑस्ट्रेलिया में भी विश्व हिंदी सम्मलेन होने चाहिए।

सिंडिकेट माध्यम से प्रकाशित करते हैं। समाचार-पत्रों में जिस गति से हिंदी का वैश्वीकरण हो रहा है उस गति से अंग्रेजी का नहीं हो रहा है।

आज का युवा साहित्य से दूर होता जा रहा है, इसके लिये आप किसे दोषी मानते हैं।

साहित्य की परिभाषा क्या है? लोक साहित्य? जासूसी दुनिया? आज के साहित्य की परिभाषा १९वीं शताब्दी की है। उसकी परिभाषा को विस्तृत कीजिये। इसमें लोकप्रिय साहित्य क्यों नहीं आ सकते हैं?

हिन्दी में प्रायोजित पुरस्कारों, सम्मानों और विदेश यात्राओं की भरमार है, क्या इससे साहित्य के स्तर में इजाफा हुआ है या गिरावट आई है।

विश्व हिंदी सम्मलेन भारत के विदेश मंत्रालय की नीति है। भारत में जो पुरस्कार मिलते हैं वे विश्व हिंदी सम्मलेन के पुरस्कारों से भिन्न हैं। विश्व हिंदी सम्मेलन का मकसद है हिंदी प्रेमियों को एक सूत्र में बांधना। यह भारत सरकार की एक सॉफ़्ट पॉवर नीति है। चीन इस तरह के कई सॉफ़्ट पॉवर उपाय अपनाता है। विश्व हिंदी सम्मलेन में कोई हानि नहीं है। ऑस्ट्रेलिया में भी विश्व हिंदी सम्मलेन होने चाहिए। विद्यालयों में हिंदी की पढ़ाई हो। ऑस्ट्रेलिया में शायद यह सम्भव हो क्योंकि वहाँ की सरकार चाहती है कि हिंदी को बढ़ावा मिले। इसके लिए राष्ट्रीय सोच की ज़रूरत है।■